

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली-110007, आई. एफ. एस.कोड - SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868051444 पर एस.एम.एस कर दें या 9958889970 पर Paytm कर दें। - अनिल आर्य



केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—<http://www.facebook.com/groups/aryayouth/>

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

वर्ष-38 अंक-6 भाद्रपद-2078 दयानन्दाब्द 198 16 अगस्त से 31 अगस्त 2021 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.08.2021, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoo.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल में भी 264वां वेबिनार सम्पन्न

स्वतंत्रता का 'अमृत महोत्सव' सोल्लास सम्पन्न

राष्ट्र सर्व प्रथम की भावना जगाने की आवश्यकता -आर्य रविदेव गुप्ता
स्वदेशी के सर्व प्रथम प्रणेता थे महर्षि दयानंद -राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

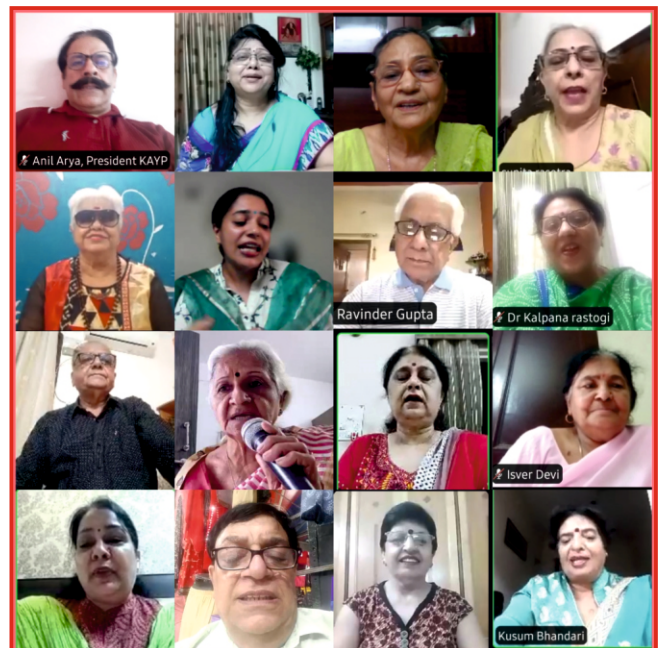
शुक्रवार 13 अगस्त 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव' ऑनलाइन मनाया गया। यह कोरोना काल में 264वां वेबिनार था। वैदिक विद्वान आर्य रविदेव गुप्ता ने कहा कि राष्ट्र सर्व प्रथम है यह भावना भरने की आज आवश्यकता है। वैचारिक स्वतंत्रता के नाम पर राष्ट्र विरोधी स्वर का यहाँ कोई काम नहीं है। ऐसे लोगों के साथ सख्ती से पेश आने की आवश्यकता है। राष्ट्र में सभी को जीने का समान अधिकार है यह सुनिश्चित होना चाहिए। स्वाधीनता की सुरक्षा ही क्रांतिकारियों को सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती है। आंतकवादी व उनके सहयोगी क्षमा योग्य नहीं हो सकते। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में स्वदेशी की अवधारणा पोषित की थी। उन्होंने कहा था कि कोई कितना भी करे परंतु स्वदेशी राज्य सर्वोत्तम है। देश की आजादी की लड़ाई में महर्षि दयानंद से प्रेरणा पाकर हजारों नोजवान कूद पड़े। आर्य समाज के आंदोलन ने हैदराबाद के निजाम को घुटने टेकने को मजबूर कर दिया। यह इतिहास नयी पीढ़ी को बतलाने की अत्यंत आवश्यकता है। मुख्य अतिथि आर्य नेता रमेश गाडी व अध्यक्ष स्वदेश कुमार शर्मा ने भी राष्ट्र विरोधी ताकतों को सख्ती से कुचलने की मांग की। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने राष्ट्र रक्षा का संकल्प दिलवाया। गायिका दीप्ति सपरा, प्रवीना ठक्कर, आशा आर्या, ईश्वर देवी, कृष्णा गांधी, विजय कपूर, नरेंद्र आर्य सुमन, राजकुमार भंडारी, मर्दुल अग्रवाल, सुशांता अरोड़ा, रजनी गर्ग, रजनी चुघ, किरण सहगल, वीरेन्द्र आहूजा, देवेन्द्र गुप्ता, रवीन्द्र गुप्ता, सुषमा बजाज आदि ने देशभक्ति गीतों से समा बांध दिया। प्रमुख रूप से राजेश मेहंदीरता, संध्या पाण्डेय, रंजना मित्तल, आस्था आर्या, कमलेश हसीजा, महेंद्र भाई, प्रेम हंस आदि उपस्थित थे।



'हरियालो सावन आयो रे' पर गोष्ठी सम्पन्न

तीज हरियाली उत्साह का संदेश देता है-दर्शनाचार्य विमलेश बंसल
खुदीराम बोस का बलिदान अविस्मरणीय रहेगा -राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

बुधवार 11 अगस्त 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'हरियालो सावन आयो रे' पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल में 263 वां वेबिनार था। वैदिक विदुषी दर्शनाचार्य विमलेश बंसल ने कहा कि तीज जब आती है तो चारों ओर हरियाली, उल्लास, उत्साह का वातावरण बन जाता है। उन्होंने कहा कि सावन की हरियाली प्रतिपल यदि हम चाहते हैं तो श्रुति का संदेश सुनो। पढ़ो पढ़ाओ, सुनो सुनाओ, ईश्वरीय वाणी वेद को घर घर पहुंचाओ। महर्षि दयानंद के अनुसार- वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना परम धर्म है। अपने अपने वर्ण योग्यता पहिचान कर्तव्यों को निभाते हुए अज्ञान को स्वाध्याय द्वारा, अन्याय को न्याय द्वारा, अभाव को आय, अव्यवस्था को सुव्यवस्था-सेवा द्वारा जड़ से मिटाया जा सकता है। स्वयं प्रकृति भी इन दिनों हमें त्यागमयी हो संगच्छध्वं की शिक्षा दे रही है। ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों को सम्यक जानकर ही ज्ञानमय व्यवहार हो तो जीवन हरियाली से भर सकता है। हर सुख का आधार ज्ञान ही है जो ईश्वर ने हमें वेद वाणी के रूप में दिया है हम सभी वेदोक्त होकर जीवन को हरियाली से समृद्ध करें। तत्पश्चात् उन्होंने वेद महार सुना कर सभी को आनंदित कर दिया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने महान क्रांतिकारी 19 वर्ष की आयु में फांसी का फंदा चूमने वाले महान देशभक्त खुदीराम बोस को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि युवाओं को उनके बलिदान से प्रेरणा लेनी चाहिए। उनके 113 वें बलिदान दिवस पर राष्ट्र रक्षा का संकल्प लेना चाहिए। मुख्य अतिथि आर्य नेत्री प्रेम सब्बरवाल व अध्यक्ष सुनीता रसोत्रा ने तीज के महत्व पर प्रकाश डाला उन्होंने कहा कि ये मिलने मिलाने का त्यौहार है। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि प्रफुल्लित और झूलते झूले प्राकृतिक सौंदर्य एक नया जोश जीने के लिए पैदा करते हैं। गायिका रजनी गर्ग, अनुश्री खरबंदा, वीना वोहरा, प्रतिभा कटारिया, ईश्वर देवी, राज चावला, पंकी आर्या, विजयलक्ष्मी आर्या, सुशांता अरोड़ा, रजनी चुघ, चंद्रकांता आर्य, वीरेन्द्र आहूजा, प्रवीना ठक्कर, रवीन्द्र गुप्ता आदि ने गीत सुनाये। हापुड़ से आनंद प्रकाश आर्य, महावीरसिंह आर्य, डॉ. रचना चावला, प्रो. करुणा चांदना, आस्था आर्या, वीना आर्या, देवेन्द्र गुप्ता, संध्या पाण्डेय, कुसुम भंडारी, अनिता प्रोवर, पूजा सलूजा, अंजू मेहरोत्रा आदि उपस्थित थे।



स्वामी विरजानन्द जी की 153वीं पुण्यतिथि 14 सितम्बर पर विशेष

ऋषि दयानन्द का निर्माण स्वामी विरजानन्द की शिक्षा ने किया

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

ऋषि दयानन्द विश्व-दिग्विजयी ऋषि हैं। उन्होंने सभी मतों के आचार्यों को शंका समाधान, वार्ता तथा शास्त्रार्थ का अवसर देकर एवं साथ ही सभी मतों के आचार्यों की शंकाओं का समाधान कर तथा 55 से अधिक शास्त्रार्थों में विजयी होकर वह विश्व गुरु व दिग्विजयी विद्वान् बने हैं। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश रूपी जो अनूठा धर्म-ग्रन्थ लिखा वह भी उन्हें विश्व गुरु सहित दिग्विजयी बनाता है। ऋषि दयानन्द ने अपने इस विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ में वैदिक सिद्धान्तों व मान्यताओं पर तर्क व युक्तियों सहित प्रकाश डाला है और प्रायः सभी विषयों पर उठने वाली शंकाओं का समाधान किया है। उन्होंने संसार के सभी मतों की समीक्षा कर उनमें अविद्या के अंश को भी सभी लोगों के सामने रखा है। उनकी समीक्षाएँ अकाट्य हैं जिनका समाधान विभिन्न मत-मतान्तरों के आचार्य नहीं कर पाये हैं। सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के लेखन और वेद प्रचार कार्यों का उद्देश्य सत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों के आधार पर देश व संसार के लोगों को संगठित करना था जिससे सब मित्र-बन्धु-कुटुम्बियों की तरह संसार में रहते हुए एक दूसरे के दुःखों के निवारण तथा सुखों में वृद्धि करने में सहयोगी बन सकें। स्वामी दयानन्द जी को यदि समझना है तो उन्हें उनके सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, पत्र और विज्ञापन, वेदभाष्य, ऋषि जीवन चरित आदि ग्रन्थों के माध्यम से जाना जा सकता है। वह संसार में किसी मनुष्य या मत के विरोधी नहीं थे परन्तु सत्य के अवश्य ही साधक व प्रचारक थे। ईश्वर, जीव व प्रकृति का सत्यस्वरूप उन्होंने उपस्थित किया है। वह ईश्वर के सत्यस्वरूप की मनुष्यों द्वारा उपासना करने के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञ थे। उनका यह कार्य संसार के सभी कार्यों में सबसे महान प्रतीत होता है क्योंकि इससे मनुष्य का वर्तमान व शेष जीवन एवं मृत्यु के बाद का जीवन भी सुधरता व उन्नति को प्राप्त होता है।

ऋषि दयानन्द को सद्ज्ञान से अलंकृत करने वाले उनके विद्यागुरु प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती, मथुरा थे। स्वामी विरजानन्द जी ने दयानन्द जी को न केवल विद्यादान दिया अपितु उन्हें देशोपकार तथा विश्व में सत्य मत के प्रचार द्वारा सुख व शान्ति का विस्तार करने की प्रेरणा करने वाले भी वही थे। स्वामी विरजानन्द जी का जन्म सारस्वत ब्राह्मण कुल में पिता श्री नारायणदत्त शर्मा के घर पर अग्रेजी वर्ष 1778 ईसवी अथवा विक्रम संम्वत् 1835 के उत्तरार्ध में पौष मास में हुआ था। स्वामी विरजानन्द जी का जन्म स्थान जालन्धर नगर के करतारपुर कस्बे का गंगापुर ग्राम है। बचपन में ढाई से छः वर्ष की अवस्था के बीच आपको शीतला रोग हुआ था जिससे आपकी नेत्र-ज्योति समाप्त प्रायः हो गई थी। विरजानन्द जी को उर्दू-फारसी के लेखन-पठन का सम्यक् ज्ञान था। ऐसा अनुमान किया जाता है कि विरजानन्द जी की नेत्र-ज्योति उनकी 6 वर्ष की अवस्था के कुछ वर्ष बाद नष्ट हुई थी। विरजानन्द जी के पिता संस्कृत के विद्वान् थे। इन्होंने अपने पिता से ही संस्कृत का आरम्भिक ज्ञान प्राप्त किया था। पिता के देहान्त से पूर्व आपने अमर-कोष कण्ठस्थ कर लिया था। सारस्वत व्याकरण को हलन्त पुल्लिङ्ग तक साधनिका सहित आप पढ़ चुके थे। यह भी अनुमान किया जाता है कि विरजानन्द जी ने घर पर कुछ पंचतन्त्र एवं हितोपदेश भी पढ़ा था। उन्होंने जब घर छोड़ा था तो वह संस्कृत-भाषण कर लेते थे। इस समय से ही इन्होंने संस्कृत को अपने व्यवहार की भाषा बना लिया था।

विरजानन्द जी के पिता के देहान्त के स्वल्प काल बाद माताजी का भी देहावसान हो गया था। आयु के बारहवें वर्ष में वह अपने भाई व भावज के आश्रित हो गये थे। भाई-भावज को इनके प्रति कर्तव्यों का निर्वाह करने में किसी प्रकार का उत्साह नहीं था। स्वामी विरजानन्द जी के जीवनीकार पं० भीमसेन शास्त्री लिखते हैं कि भाई-भावज के दुर्व्यवहार की मात्रा बढ़ती गई। विरजानन्द जी बचपन से ही तेजस्वी, आत्मगौरव के भाव से पूर्ण और उग्र प्रकृति के थे। भाई-भावज के व्यवहार से कुपित व दुःखी होकर विरजानन्द जी ने अपने ग्राम गंगापुर का त्याग कर दिया था और वह ऋषिकेश पहुंच गये थे। ऋषिकेश में आपने गंगा नदी में खड़े होकर लम्बी अवधि तक गायत्री मन्त्र का जप किया। तीन वर्ष ऋषिकेश में रहते हुए आपने गंगा नदी में खड़े होकर गायत्री जप आदि कार्य किये। एक दिन आपने रात्रि में स्वप्न देखा। स्वप्न में 'आपने सुना कि कोई कह रहा है कि तुम्हारा जो होना था हो चुका। अब तुम यहां से चले जाओ।' इसके बाद निद्रा भंग हो गई। आपने स्वप्न पर विचार किया और ऋषिकेश से हरिद्वार आ गये। हरिद्वार में आपने स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी से संन्यास आश्रम की दीक्षा ली और साधक युवक ब्रजलाल से स्वामी विरजानन्द बन गये। स्वामी विरजानन्द जी ने संवत् 1856 से 1868 तक 12 वर्ष काशी में निवास किया। काशी से आप धर्मनगरी 'गया' पहुंचे और वहां संवत् 1868 से 1871 तक तीन वर्ष रहे। इसके बाद आप कोलकत्ता जाते हैं और यहां संम्वत् 1872 से 1878 तक लगभग 6 वर्ष तक रहते हैं। काशी आदि स्थानों पर आपने अपने अध्ययन का विस्तार किया। कोलकत्ता से आप हरिद्वार पहुंचे थे और वहां से सोरों आकर यहां ठहरे। हरिद्वार में आप अपने संन्यास गुरु स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से भी मिले थे। ऐसा अनुमान किया जाता है कि पूर्णानन्द जी अपने शिष्य विरजानन्द जी की विद्या की उन्नति की बातें जानकर प्रसन्न एवं सन्तुष्ट हुए होंगे। स्वामी विरजानन्द जी सोरों से अलवर पहुंचे और वहां से पुनः सोरों आये। कुछ समय सोरों रुककर आप मथुरा आ गये जहां आपने सन् 1845 ईसवी में वह संस्कृत पाठशाला खोली जहां सन् 1860 में आकर स्वामी दयानन्द ने तीन वर्ष आपसे आर्ष व्याकरण एवं शास्त्रीय ग्रन्थों का अध्ययन किया था। मथुरा आने का कारण यह था कि यहां संस्कृत की अनेक पाठशालायें थी। 800 से 1200 बच्चे संस्कृत का अध्ययन करते थे। यहां अन्य स्थानों से अधिक योग्य विद्यार्थी उपलब्ध हो सकते थे। दानी महानुभाव भी यहां संस्कृत अध्यापन में सहायता देते थे। वह बालकों की पठन पाठन सहित भोजन के प्रबन्ध द्वारा सहायता करते थे। स्वामी विरजानन्द जी का लक्ष्य एक योग्य शिष्य प्राप्त करना व उसे अपनी समस्त ज्ञान-सम्पदा प्रदान करना भी था। यह सम्भावना उन्हें मथुरा में ही दिखाई दी थी। यहां आपके विद्याध्ययन

काल के दो सहपाठी भी निवास करते थे जिनका आमंत्रण आपको प्राप्त होता रहता था। यही सब कारण मथुरा आकर पाठशाला खोलने व अध्यापन कराने की भूमिका बने थे। स्वामी दयानन्द जी योग्यतम गुरु स्वामी विरजानन्द जी के योग्य व अपूर्व शिष्य थे। स्वामी दयानन्द जी के विरजानन्द जी के पास मथुरा पहुंचने की कथा का वर्णन हम पं० भीमसेन शास्त्री के शब्दों में कर रहे हैं। इसमें स्वामी दयानन्द अपने परिवारजनों का वर्णन भी सम्मिलित है। स्वामी दयानन्द जी का जन्म टंकारा, मोरवी राज्य के वैभटदार श्री कर्षनजी तिवारी के घर फाल्गुन बदि 10 शनिवार, मूल नक्षत्र में (12-2-1825 को) हुआ था। इनका नाम मूलशंकर रखा गया था। मूलशंकर के पश्चात् इनसे दो वर्ष छोटी बहिन थी, उसकी विशूचिका से मृत्यु हो गई। मृत्यु का भयंकर दृश्य प्रथम बार देख, इनका मन सांसारिक जीवन से हट गया। भगिनी की मृत्यु के 3 वर्ष पश्चात् इनके सुहृद चाचा की मृत्यु ने इनके वैराग्य को अति दृढ़ कर दिया। इनका विवाह होने को था कि इससे कुछ दिन पूर्व सं० 1903 के प्रारम्भ में गृहस्थ-बन्धन से बचने के लिये यह घर से चले गये और योगियों को ढूँढते फिरे। सायला में नैष्ठिक ब्रह्मचारी बन 'शुद्ध चौतन्य' नाम पाया। कार्तिक स्नान के अवसर पर मूलशंकर सिद्धपुर पहुंचे। वहां इनके पिता ने इन्हें जा पकड़ा पर ये चौथी रात को फिर भाग गए। अनेक स्थानों पर विद्याग्रहण व राजयोग सीखते हुए सं० 1905 की ग्रीष्म ऋतु में चाणोद-करनाली में श्री पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास लिया और दयानन्द सरस्वती नाम पाया। छः मास तक दण्ड धारण कर विसर्जन कर दिया। वे स्थान-स्थान पर जाकर विद्याग्रहण व योग-साधना परायण रहे। संम्वत् 1910 के आरम्भ में चाणोदकन्याली में दो अच्छे योगी ज्वालानन्द पुरी तथा शिवानन्द गिरि मिले। इन्होंने स्वामी दयानन्द की परीक्षा कर इन्हें अधिकारी जान योग की उत्तम शिक्षा दी। इसके उपरान्त आबू पर्वत पर योगाभ्यास करके कुछ और भी योग तत्वों को प्राप्त करते हुए ये सं० 1911 के अन्त में हरिद्वार के कुम्भ मेले पर पहुंचे। संवत् 1912 में ज्ञान सम्पन्न योगियों व गुरुओं की खोज में केदारनाथ, बदरीनाथ आदि की यात्रा की। इस यात्रा में जोशीमठ के शंकराचार्य ने इन्हें हरिद्वार में स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से पढ़ने की सम्मति दी। स्वामी दयानन्द उत्तराखण्ड के पर्वतों की यात्रा से लौटकर संवत् 1912 में लगभग 108 वर्ष के अतिवृद्ध स्वामी पूर्णानन्दजी के पास पहुंचे। वे अतिवृद्ध हो मौनी बन गये थे, पढ़ाते न थे। उन्होंने लिखकर दयानन्द को अपने शिष्य विरजानन्द जी के पास मथुरा जाने की प्रेरणा की।

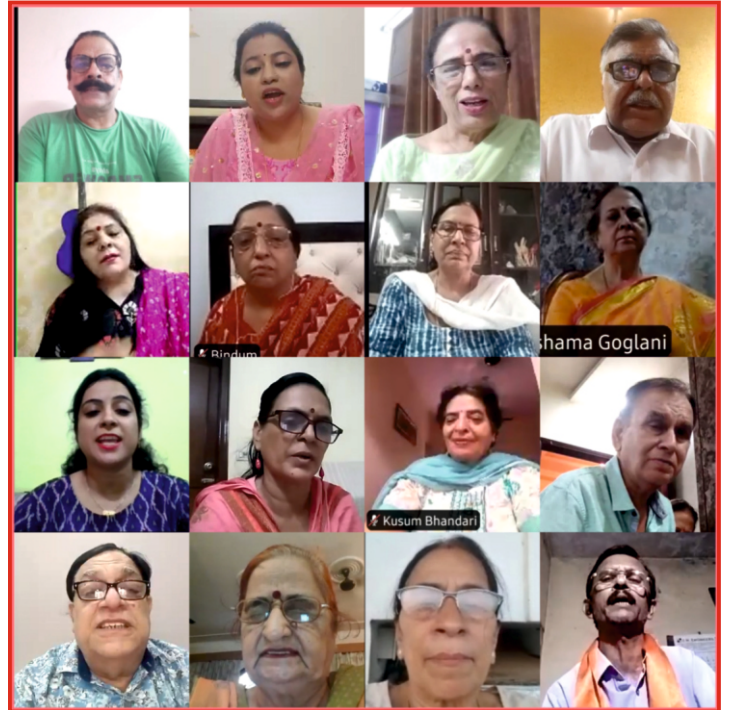
स्वामी दयानन्द संवत् 1917 कार्तिक शुक्ला 2 बुधवार (14-11-1860) को स्वामी विरजानन्द जी के शिष्य बने। उन्होंने इनसे व्याकरण व वेदान्त-दर्शन का अध्ययन किया। व्याकरण के विशेष सूत्रों पर दार्शनिक चर्चायें काशी के कौमुदी के अध्यापन में भी आती हैं। इन चर्चाओं का भी विस्तार-संकोच गुरु-शिष्य की योग्यतानुसार हो सकता है। जब विरजानन्द जैसे दार्शनिक गुरु थे, और दयानन्द जैसे दार्शनिक शिष्य थे, तो दर्शन के प्रायः सभी मार्मिक स्थलों की आलोचना व्याकरण व वेदान्त के अध्ययन में ही आ गई होगी। दयानन्द के बुद्धि-विकास में विरजानन्द का विशेष भाग था। विरजानन्द व दयानन्द का संयोग मणि-कांचन था। दोनों ने परस्पर संयोग से अपने जीवनो को सफल माना। विद्या समाप्ति पर, मुमुक्षुवय, अकिंचन दयानन्द सरस्वती गुरु-दक्षिणा-नियम-निर्वाहार्थ लौंगे, गुरु-दक्षिणा के रूप में लेकर उपस्थित हुए। विरजानन्द स्व-छात्रों से गुरुदक्षिणा के रूप में कुछ न लेते थे। वे बोले—“दयानन्द, तुम्हारी यह भक्तिपूर्ण भेंट स्वीकार है, रख दो। पर इतने मात्र से गुरु-दक्षिणा न होगी। गुरु-दक्षिणा में मुझे तुमसे कुछ और मांगना है, और वह तुम्हारे पास है भी। क्या तुम मेरी मांगी वस्तु मुझे दे सकोगे?” दयानन्द बोले—“मेरा रोम-रोम आपके आदेशार्थ समर्पित है। आप निःसंकोच आदेश करिये।” देश-दशा चिन्तित विरजानन्द ने कहा—“दयानन्द! देश में घोर अज्ञान फैला हुआ है। स्वार्थी लोग जनता को पथभ्रष्ट कर रहे हैं। तुम इस व्यापक अन्धकार के निवारणार्थ सर्वात्मना प्रयत्न करो।” दयानन्द ने “तथास्तु” कहकर गुरु निर्देश को शिरोधार्य किया और सम्पूर्ण जीवन देशोद्धार में होम दिया। मोक्ष-प्राप्ति के स्थान में देशोद्धार मुख्य लक्ष्य बन गया। पं० भीमसेन शास्त्री द्वारा लिखित यह कथा स्वामी दयानन्द जी के विद्याध्ययन एवं देश हित में वेदों के पुनरुद्धार व उनके प्रचार की इतिहास-कथा है। गुरु-शिष्य के सान्निध्य ने देश का अपूर्व कल्याण किया और देश धार्मिक दृष्टि से अनिश्चितता के वातावरण से बाहर आया और अब विश्वगुरु बनने के पथ पर अग्रसर है।

स्वामी विरजानन्द जी का जीवन बहुआयामी था। उन्होंने अलवर नरेश को संस्कृत पढ़ाई थी। मथुरा की पाठशाला के लिये अलवर नरेश से आर्थिक सहायता भी प्राप्त होती थी। स्वामी विरजानन्द जी ने व्याकरणाचार्यों व पौराणिक मतों के आचार्यों से व्याकरण सम्बन्धी विषयों पर कई शास्त्रार्थ भी किये। देश के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम सन् 1857 में उनका गुप्त योगदान था, ऐसी चर्चा पढ़ने को मिलती है। स्थानाभाव से उन सबका उल्लेख सम्भव नहीं है। ईश्वर-भक्ति तथा आर्ष-ग्रन्थाध्ययन-अध्यापन की पवित्र साधना में अपना जीवन व्यतीत करते हुए नब्बे वर्ष की आयु में उदरशूल से पीड़ित रहते हुए संवत् 1925 आश्विन बदि 13, सोमवार (14-9-1868) को दण्डीजी ने मथुरा में अपनी विनश्वर देह का त्याग किया। स्वामी दयानन्द जी को जब यह समाचार शहबाजपुर में कार्तिक मास में मिला तो कहा जाता है कि वह इस वज्राहत समाचार को सुनकर स्तब्ध रह गये। कुछ देर बाद वह बोले 'व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया।' उस दिन दयानन्द जी ने जल भी ग्रहण नहीं किया था, ऐसा बताया जाता है। स्वामी दयानन्द का निर्माण स्वामी विरजानन्द की शिक्षा व सान्निध्य की देन थी। इन दोनों महापुरुषों को सादर नमन है। दयानन्द जी के द्वारा वैदिक धर्म का पुनरुद्धार एवं रक्षा हुई है और देश का अपूर्व कल्याण हुआ है। ओ३म् शम्।

स्वास्थ्य क्या है-? पर गोष्ठी सम्पन्न

शरीर और मन से क्रियाशील रहे –योगाचार्य श्रुति सेतिया

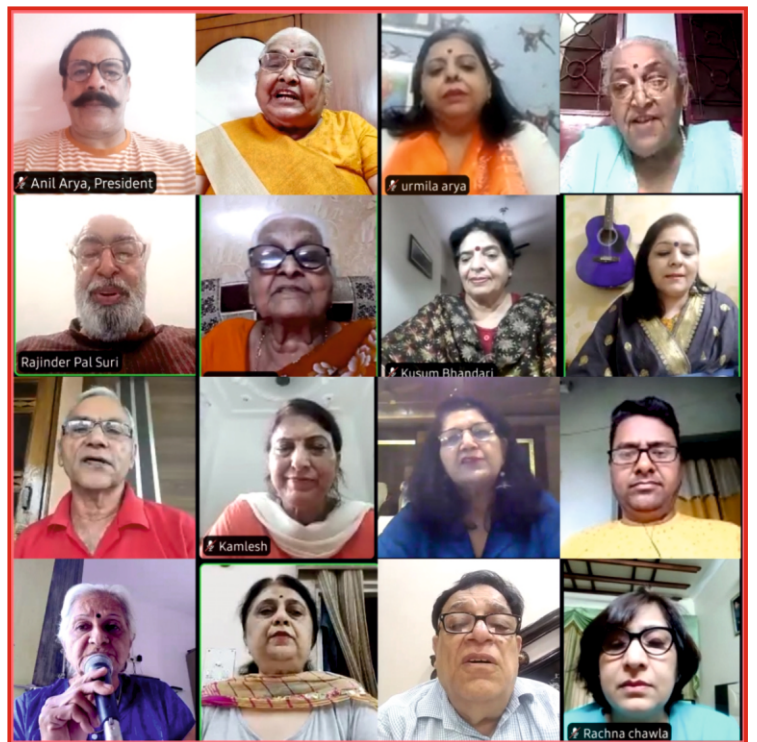
गुरुवार 5 अगस्त 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'स्वास्थ्य क्या है-?' पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कॅरोना काल में 260 वा वेबिनार था। मुख्य वक्ता योगाचार्य श्रुति सेतिया ने कहा कि केवल शारीरिक नहीं अपितु मानसिक रूप से स्वस्थ होना आवश्यक है। प्रत्येक मानव चाहता है कि वह कभी भी रोग ग्रस्त ना हो, सदैव स्वस्थ, चुस्त तंदुरुस्त रहे। भरपूर सुख, शांति, ऐश्वर्य प्राप्त करें। ऐसा तभी हो सकता है जब वह स्वास्थ्य के नियमों का यथावत पालन करें। सुमार्ग का अवलंबन करें, धर्म –अधर्म, पाप –पुण्य, अच्छाई –बुराई के भेद को जानकर सदैव धर्म परायण बने। व्यक्ति तभी अपने जीवन का पूरा आनंद उठा सकता है जब वह शारीरिक और मानसिक दोनों तरह से स्वस्थ रहे। स्वास्थ्य का सीधा संबंध क्रियाशीलता से है। जो व्यक्ति शरीर और मन से पूरी तरह क्रियाशील है उसे ही पूर्ण स्वस्थ कहा जा सकता है। हमें अपने स्वास्थ्य की रक्षा करनी होगी ताकि हमारे जीवन की यात्रा शुरु से ही सही दिशा में जा सके। छोटी आयु से हमें प्रयास करने होंगे। हमारी आदतें, हमारी मनोवृत्ति, हमारे विचार और संस्कार वैसे ही स्थिति में डालने लगेंगे जैसी स्थिति स्वास्थ्य की रक्षा करने के लिए आवश्यक होती है। एलोपैथिक दवाइयों पर ही निर्भर ना रहे। दवाइयों का मतलब स्वास्थ्य नहीं होता। स्वास्थ्य का मतलब सुबह जल्दी उठना, पेट व दांत साफ करके प्राणायाम, योग अभ्यास करना, संतोषी जीवन जीना, नियमित संध्या करना परमात्मा का धन्यवाद करना, किसी से ईर्ष्या ना करना, किसी का अपकार ना करना। इन नियमों का पालन करने से ही मिलता है उत्तम स्वास्थ्य। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि केवल बाहरी या दिखावटी प्रसन्नता नहीं अपितु आंतरिक भी होनी चाहिये। प्रसन्नचित व्यक्ति को देखकर मन स्वयं ही आहादित हो जाता है और मन को सुख व शांति मिलती है। हमें अपने जीवन को ही सुगंधित बनाना चाहिए। अध्यक्ष योग शिक्षक शांता तनेजा व मुख्य अतिथि सोहन लाल आर्य ने स्वस्थ रहने और प्रसन्न रहने के कई लाभ व कारण समझाये। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने हास्य योग का महत्व बताया। योगाचार्य सौरभ गुप्ता के जन्मदिन पर बधाई दी गई। गायिका संगीता आर्या, बिंदु मदान, प्रवीना ठक्कर, राजश्री यादव, दीप्ति सपरा, रेखा गौतम, ईश्वर देवी, जनक अरोड़ा, सुखवर्षा सरदाना, नरेन्द्र आर्य सुमन, रवीन्द्र गुप्ता, नरेश प्रसाद आर्य, अशोक गुगलानी आदि ने मधुर गीत सुनाये। प्रमुख रूप से राजेश मेहंदीरत्ता, अमरनाथ बत्रा, वीरेन्द्र आहूजा, उर्मिला आर्या, प्रकाशवीर शास्त्री, आस्था आर्या आदि उपस्थित थे।



जन्म और मृत्यु पर गोष्ठी सम्पन्न

जन्म और मृत्यु के बंधन से छुटकारा ही मुक्ति है –रमा चावला

शनिवार 7 अगस्त 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'जन्म और मृत्यु' विषय पर ऑनलाइन वेबिनार आयोजित किया गया। यह कॅरोना काल में 261 वा वेबिनार था। वैदिक विदुषी रमा चावला ने कहा कि जन्म और मृत्यु के बंधन से छूट जाना ही मुक्ति कहलाता है। मानव जीवन बहुत दुर्लभ जीवन है बड़ी कठिनाई से हमें मिलता है जन्म और मृत्यु एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जन्म और मृत्यु के एक दूसरे के बंधे हुए हैं और एक दूसरे के पूरक भी हैं। जन्म ही दुख का कारण है जन्म होगा तो मृत्यु निश्चित ही है भले बुरे कर्म ही जन्म का कारण है। मृत्यु परमात्मा का अटल नियम है जैसे संयोग के साथ वियोग जुड़ा हुआ है मृत्यु बहुत बड़ा पहरेदार है जो हमें एक पल के लिए भी अपने से अलग नहीं करता सब के गले में मृत्यु का फंदा पड़ा हुआ है ना जाने मृत्यु का कब बुलावा आ जाए मृत्यु को तो विद्वान और योगी भी नहीं टाल सके हैं ढलती हुई उम्र के साथ मृत्यु की सोच तथा तैयारी करनी चाहिए क्योंकि मृत्यु का भय हमें परमात्मा से प्रीति करवाता है मृत्यु का चिंतन हमें पाप अपराध अधर्म बुराइयों से सन्मार्ग प्रभु भक्ति की ओर ले जाता है। साकाम कर्म से बंधन तथा निष्काम कर्म से हमें मोक्ष प्राप्त होता है अतः अंत में यही कहना चाहेंगी कि जो परमात्मा रूपी कील के पास पहुंच जाता है वह जन्म और मृत्यु के बंधन से छूट जाता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि जिसकी यश कीर्ति जीवित है वह जीवित है व्यक्ति को सदैव अच्छे कर्म करने चाहिए। मुख्य अतिथि उर्मिला आर्या व अध्यक्ष आशु कवि राज सरदाना ने कहा कि मृत्यु एक अटल सत्य है उसे हंस कर स्वीकार करना चाहिए। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि योग से हम मृत्यु को सुगम बना सकते हैं। गायिका प्रवीना ठक्कर, कुसुम भंडारी, संगीता आर्या, वीरेन्द्र आहूजा, रवीन्द्र गुप्ता, सुमित्रा गुप्ता, कमलेश हसीजा, प्रतिभा कटारिया, ईश्वर देवी, संध्या पांडेय आदि ने भजन सुनाये। स्वर्ण पदक विजेता नीरज चोपड़ा को बधाई दी गई। प्रमुख रूप से प्रो. करुणा चांदना, डॉ. रचना चावला, पूरन चंद आर्य (रांची), आर पी सूरी, राजेश मेहंदीरत्ता, अभिमन्यु चावला, अमरनाथ बत्रा, धर्मदेव खुराना, आस्था आर्या आदि उपस्थित थे।



केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अगस्त-2021 के 266 से 273 वेबिनारों की सूची

1. मंगलवार, 17 अगस्त 2021, सायं 5 बजे, विषय: जोड़ों का दर्द, द्वारा डा.रमाकांत गुप्ता
2. वीरवार, 19 अगस्त 2021, सायं 5 बजे, विषय: वैदिक सिद्धान्त सर्वोपरि-5, द्वारा विजयभूषण आर्य
3. शनिवार, 21 अगस्त 2021, सायं 5 बजे, विषय: श्रावणी पर्व का वैदिक स्वरूप, द्वारा डा.रामचन्द्र जी
4. सोमवार, 23 अगस्त 2021, सायं 5 बजे, विषय: मां के दूध का महत्व, द्वारा प्रो. करुणा चांदना
5. बुधवार, 25 अगस्त 2021, सायं 5 बजे, विषय: सीखें पांच तत्वों को संतुलित करना, द्वारा टीना कपूर
6. शुक्रवार, 27 अगस्त 2021, सायं 5 बजे, विषय: जप जी-मेरे विचार में, द्वारा अस्तिन्द्र कौर
7. रविवार, 29 अगस्त 2021, सायं 5 बजे, महर्षि दयानन्द की दृष्टि में योगीराज श्री कृष्ण, द्वारा-आचार्य हरिओम शास्त्री
8. मंगलवार, 31 अगस्त 2021, सायं 5 बजे, विषय: स्वरोजगार ही उन्नत समाज का एक मात्र विकल्प, द्वारा डा.रीना शर्मा

ज्ञान, कर्म, उपासना पर गोष्ठी सम्पन्न

ज्ञान पूर्वक कर्म ही श्रेष्ठ गति देगा –आचार्य गवेन्द्र शास्त्री
जीवन स्वयं एक कर्म क्षेत्र है –ओम सपरा

रविवार 1 अगस्त 2021, केंद्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'ज्ञान, कर्म, उपासना' पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल में 258 वेबिनार था। वैदिक विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने कहा ज्ञान कर्म उपासना त्रिवेणी है। ऋग्वेद के द्वारा आलस्य को छोड़ दो, क्योंकि ज्ञान अग्नि हमेशा आगे बढ़ाती है यजुर्वेद कर्म का वेद है। सब की सेवा करना सबसे उत्तम कर्म है सामवेद वाणी का वेद हमेशा मीठी वाणी बोलो ईश्वर की उपासना है। अथर्ववेद मन का संयम और सहनशील सिखाता है ज्ञान कर्म और उपासना मुक्ति के साधन है त्रिवेणी है। मनुष्य जिस भी स्थिति में रहे ज्ञान कर्म उपासना के साथ रहे तो निश्चित ही जीवन की नौका पार हो जाएगी ज्ञान पूर्वक न्याय त्याग पूर्वक संसार का भोग करना चाहिए। अपने आप को पहचानो यह मानव जीवन बड़ा अमूल्य है अपने धर्म तथा कर्तव्य का पालन करो आपके द्वारा किया गया ज्ञान पूर्वक कर्तव्य ही जीवन को श्रेष्ठ गति प्रदान कराएगा। अध्यक्ष आर्य नेता ओम सपरा ने कहा कि जीवन स्वयं एक कर्म क्षेत्र है जो हर पल जीना सिखाता है। मुख्य अतिथि डॉ श्वेतकेतु शर्मा (अध्यक्ष, वेद प्रचार मंडल बरेली) ने कहा कि वेद मार्ग सर्वश्रेष्ठ है व्यक्ति को पुरुषार्थी होना चाहिए। केंद्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि पुरुषार्थ ही इस दुनिया में सब कामना पूरी करता है। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका प्रवीना ठक्कर, रवीन्द्र गुप्ता, संध्या पांडेय, ईश्वर देवी, सुखवर्षा सरदाना, जनक अरोड़ा, आशा आर्या ने भजन प्रस्तुत किये।



तनाव प्रबंधन पर गोष्ठी सम्पन्न

योग, संगीत व डांस करके रहे तनाव मुक्त –डॉ. सुनील रहेजा
नियमित दिनचर्या व समय प्रबंधन आवश्यक –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

मंगलवार 3 अगस्त 2021, केंद्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'तनाव प्रबंधन' पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल में 259 वेबिनार था। मुख्य वक्ता जी बी पंत अस्पताल के एम एस डॉ. सुनील रहेजा ने कहा कि आज तनाव मनुष्य के जीवन की सबसे बड़ी समस्या बन गया है। काम का दबाव, आर्थिक समस्या, स्टेटस सिंबल, पारिवारिक वातावरण कई इसके कारण हो सकते हैं। हम संगीत को अपनाकर तनाव कम कर सकते हैं। योगा स्वस्थ जीवन व तनाव को दूर करता है। डांस करना बहुत कारगर हो सकता है। हरी सब्जियां, पौष्टिक व सन्तुलन ले इससे हम तनाव से बच सकते हैं। केंद्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि अच्छा व स्वच्छ भोजन व नियमित व संयमित दिनचर्या बनाना आवश्यक हो गया है। तभी हम स्वस्थ जीवन जी सकते हैं। अच्छी पुस्तकें भी ज्ञान व मनोरंजन, व्यस्तता में सहायक है। आर्य नेता डालेश त्यागी ने कहा कि महापुरुषों के जीवन हमें सही मार्ग प्रशस्त करते हैं, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम व स्वामी दयानंद हमारे आदर्श हो सकते हैं। अध्यक्ष डॉ. साधना मित्तल ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए प्राकृतिक जीवन शैली अपनाने पर जोर दिया। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने योग का महत्व व धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका प्रवीना ठक्कर, रवीन्द्र गुप्ता, संध्या पांडेय, ईश्वर देवी, नरेंद्र आर्य सुमन, कविता आर्या, जनक अरोड़ा, प्रेम हंस, कुसुम भंडारी आदि ने भजन प्रस्तुत किये।



आर्य गायक नरेन्द्र आर्य सुमन का जन्मोत्सव सम्पन्न

सुमन जी सौम्य, मिलनसार, ओजस्वी गीतकार है –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

रविवार 8 अगस्त 2021, आर्य समाज के मूर्धन्य संगीतकार नरेन्द्र आर्य सुमन का 68 वा जन्मोत्सव ऑनलाइन जूम पर सोल्लास मनाया गया। केंद्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि नरेन्द्र आर्य सुमन राष्ट्रवादी संगीतकार है। वह पहले डीएवी मैनेजिंग कमेटी में, फिर पी एन बी में कार्यरत रहे। अब पूरा समय समाजसेवा कर रहे हैं। आप मिलनसार, हंसमुख, सौम्य स्वभाव के व्यक्ति हैं। आपकी दीर्घ आयु व स्वस्थ जीवन की कामना करते हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्य वेश जी ने सुमन जी की सराहना करते हुए शुभकामनाएं प्रदान की। कार्यक्रम का कुशल संचालन आचार्य चंद्र शेखर शास्त्री ने किया। आर्य नेता हीरालाल चावला, विनय आर्य, सतीश चड्ढा, यशपाल आर्य, डालेश त्यागी, ओम सपरा, प्रेम हंस, अश्विनी नागिया आदि ने भी अपने विचार रखे। गायिका कविता आर्या, नूपुर नागिया, मधु आर्या, सरोजिनी जोहर आदि ने मधुर गीत सुनाये। केंद्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने सुमन जी का जीवन अत्यंत प्रेरणा स्पद बताया।



सुल्तानपुरी में युवा संस्कार समारोह सम्पन्न

शनिवार 14 अगस्त 2021, केंद्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में टाटा पावर, पी 4, सुल्तानपुरी, दिल्ली 86 में युवा संस्कार अभियान के अन्तर्गत युवा संस्कार समारोह सोल्लास सम्पन्न हुआ। जिसमें 100 से अधिक युवक युवतियों ने यज्ञोपवीत धारण किया। मुख्य यजमान श्रीमति राधा व श्री दशरथ भारद्वाज जी रहे। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य महेन्द्र भाई ने उपस्थित युवक/युवतियों को वेद, यज्ञ और दैनिक नित्य कर्मों का विस्तार से बताया और माता – पिता, गुरु का सम्मान करने, मद्यपान नशीले पदार्थों व मांस अण्डों का सेवन नहीं करने का संकल्प कराया। यज्ञोपवीत के तीन धागों के सन्देश से परिचय कराया। इस अवसर पर परिषद के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष धर्मपाल आर्य, राजेश, प्रवेश कुमार, बबीता, आफरीन, रनेहा, सरिता आदि गणमान्य जन उपस्थित थे।

